आखर हिंदी पत्रिका e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 2/मार्च 2023
Received: 14/03/2023; Accepted: 17/03/2023; Reviewed: 21/03/2023; Published: 24/03/2023

भीतर की औरत के साथ जाने की ललक- कमलकुमार का उपन्यास "मैं घूमर नाचूँ"

के.एस. करुणालक्ष्मी
सहायक प्राध्यापिका और हिन्दी विभागाध्यक्षा
सरकारी महाविद्यालय, बेट्टंपाडी
lakshmikarunasharma@gmail.Com

के.एस. करुणालक्ष्मी, **भीतर की औरत के साथ जाने की ललक - कमलकुमार का उपन्यास "मैं घूमर नाचूँ"**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड3/अंक 2/मार्च 2023,(190-194)

शोधसार – 'मैं घूमर नाचूँ' लेखिका कमलकुमार का अत्यंत प्रसिध्द उपन्यास है। यह उपन्यास लेखिका कमलकुमार जी की प्रखर चिंतनदृष्टि का परिचायक है। 'मैं घूमर नाचूँ' उपन्यास राजास्थान के आँचल की महिलाओं की जीवनशैली और वहाँ के सामाजिक वातावरण का परिचय प्रस्तुत करते हुए कृष्णा नामक बालविधवा की कहानी के माध्यम से स्त्रियों की दशा का चित्रण करता है। इसमें रूढ़िवादी महिलाएँ भी चित्रित हैं तथा समाज की स्थापित मान्यताओं को ठोकर मारकर अपने भीतर की औरत के साथ सफर करने निकली महिलाओं का भी अंकन है।

मुख्य शब्द – स्वतंत्रता की तड़प, रूढ़िवादी, पोसेसिवनेस, आत्मनिवेदन, विस्थापन, निर्भाविुकता, भावुक

लेखिका कमलकुमार स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं पर लिखनेवाली सिद्धहस्त लेखिका हैं। कमलकुमारजी का उपन्यास 'मैं घूमर नाचूँ हु' औरत के जीवन की विभिन्न रंगों का अनावरण करता है। उपन्यास के आरंभ में ही कथानायिका का यह कथन कि, " मेरी इस कहानी में और भी कई कहानियाँ हैं, अलग-थलग, बिखरी, टूटी , पर ये सब मेरी जिंदगी की कहानी को पूरा करती हैं। उसे पूर्णता देती हैं। उसे लयबद्ध करती हैं। यह कहानी भूगोल, इतिहास, समय, स्थान की सीमाओं से परे है। सभी वर्गों और घेरों से परे है। यह मेरी है, तुम्हारी और उन सबकी

भी उतनी ही है। असल में यह हर औरत की कहानी है। इसलिए यह मेरी होकर भी मेरी नहीं है।"[1] उपन्यास का यह कथन उपन्यास को पढ़ने की एक मनोभूमि निर्मित करता है।

'मैं घूमर नाचूं' एक सांप्रदायिक राजास्थानी परिवार की बालविधवा कृष्णा की कहानी है। अपनी नौवीं अबोध उम्र में पति को खोकर असहाय बनकर अपने बापू के आंगन में जीवन बिताने को बाध्य कृष्णा के चरित्र का विकास उपन्यास को गरिमा प्रदान करता है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका कमलकुमार ने पीढ़ी दर पीढ़ी बदलती हुई औरत की मनःस्थिति और स्वतंत्रता की तड़प को चित्रित किया है। उपन्यास में रूढ़िवादी संस्कार प्राप्त, पति को ही अपना स्वामी माननेवाली कृष्णा की माँ भी है, और क्रांतिकारी आधुनिक सोचवाली नायिका कृष्णा भी है। विधवा पर होनेवाले सामाजिक और मानसिक शोषण की कडवाहट को चुपचाप पीते हुए जीवन की अंतिम दिनों को गिननेवाली ताई है, अपनी कला और नैपुण्य के माध्यम से एक एन.जी.ओ. की सदस्या बनकर सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध बिगुल बजा रही बुआ ऊर्मिला है। वास्तव में देखा जाए तो मिले हुए जीवन को बिना किसी शिकायत के स्वीकार करते हुए अपनी नियति पर विश्वास करके चलनेवाली औरतें एक ओर हैं तो जीवन को अपने नज़रिए से देखते हुए अपने मनचाहे जीवन को चुननेवाली ज़रीना सिफर, कृष्णा जैसे पात्र भी हैं।

कृष्णा की माँ एक रूढ़िवादी समाज में पली बढ़ी औरत है, उसके लिए उसका पति ही देवता है। इस ग्राहस्थ्य सुख के आगे उसे कोई कामना या कोई महत्वाकांक्षा भी नहीं है। किसी असाध्य बीमारी से तड़पती कृष्णा की माँ द्वारा अपने पति से कहे ये वाक्य – " अब म्हने तुम छोड़ आओ। बहुत कष्ट दिया थानूँ। अब आप मुक्त हो जाओगे। म्हाने छोड़ आओ, अपने कंधे पे। डोली में बैठाकर जैसे लाए थे, वैसे ही।" [2] पर उसकी केवल एक ही याचना है अपने पति से - " जिन हाथों से मेरी चिता में अग्नि देओगे। उनमें किसी दूसरी औरत का हाथ न पकड़ना। [3] अपने पति द्वारा अपने अंतिम संस्कार की इच्छा और अपने स्थान पर दूसरी औरत को न प्रतिष्ठित होने देने की पोसेसिवनेस के अलावा उस पीढ़ी के औरतों को कोई बड़ी इच्छा भी नहीं है।

विदा के समय कृष्णा को भी ताई ने यही सीख दी थी – " अब तेरा पति ही तेरा लोक-परलोक का स्वामी होयलो। जो तुझे डोली में बैठाकर ले जा रहा है, वो ही अर्थी पर बैठा आएगा तो तेरी जून सफल होगी। अपने धनी के खिलाफ कोई काम न करना। उसकी तन, मन, आत्मा से सेवा करना। औरत के सुख पति के पाँवों में है।" [4] कृष्णा या कृशी ने भी अपने पुनर्विवाह के बाद अपने घर परिवार को महत्व देते हुए अपनी आधी सी ज़्यादा ज़िंदगी व्यतीत कर दी थी। पर अचानक कुछ घटनावलियाँ ऐसी हुई कि उसके अंदर से उसके भीतर की

[1] मैं घूमर नाचूँ– कमलकुमार- राजपाल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -१२
[2] मैं घूमर नाचूँ– कमलकुमार- राजपाल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या – १६
[3] मैं घूमर नाचूँ– कमलकुमार- राजपाल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -१६
[4] मैं घूमर नाचूँ– कमलकुमार- राजपाल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या- १६

औरत जागृत हो गई और जीवन को देखने का उसका नज़रिया ही बदल गया। वह अपनी माँ को मन ही मन कहा – "मैंने जीवन भर तुम्हारी दी सीख को पूरा किया। अब मैं अपने भीतर की औरत के साथ जा रही हूँ।"[5]

"भीतर की औरत के साथ जाना" यहाँ पर बहुत सारे अर्थों को ध्वनित करता है। यह महिला को मिली व्यापक जीवनदृष्टि का परिचायक है। वास्तव में औरत की दुनिया अत्यंत संकुचित होती है। उसमें अपने परिवार के अलावा बाहरी किसी को आसानी से प्रवेश सुलभ नहीं है। वह एक दुर्भेध्य खिला है। अगर उस दुर्भेध्य खिले को कोई लांघकर आए अथवा औरत ही उसे पार करे तो औरत पर हज़ारों उंगलियाँ उठती हैं, ताने कसे जाते हैं, कलंकिनी होने का आरोप लगता है। समाज की भर्त्सना, व्यक्तिगत जीवन में आनेवाले तूफान आदि का सामना करते हुए अपने मनपसंद जीवन को हासिल करना कोई आसान बात नहीं है। आज के बदलते हुए संदर्भ में स्त्री का जीवन इतना त्रासदायक तो नहीं, पर रूढ़िवादी समाज के सामने अपनी स्वतंत्रता की तड़प को प्रकट करने का साहस कुछ ही साहसी महिलाएँ दिखाती हैं।

"बापू मैं भी गुलाबी घाघरा पहनूँगी। ओ...बापू मैं भी गुलाबी ओढ़नी पहनूँगी, गोटा किनारी की।" [6] कहकर अपने बापू से नये वस्त्रों के लिए ज़िद करनेवाली बालविधवा कृशी को नियति ने शादी शुदा होकर फिर से सौभाग्यवती होने का अवसर तो प्रदान किया, पर... क्या वास्तव में उसकी इच्छाएँ पूरी हुईं? बाल विधवा कृशी की शादी तो तय हुई थी। आधुनिक सोचवाले उसके स्कूल मास्तर पिताजी ने शादी तय की थी। उसके लिए भी अनेक विरोध सहने पडे थे। " विधवा का ब्याह रचा रहे हो रामलाल? अरे तुम्हें नरक में भी जगह नहीं मिलेगी।"[7]

इस उपन्यास में कृष्णा का वैधव्य तो मिट गया। डॉक्टर साथी उसे मिल गया। समाज में मान सम्मान मिलने लगे। क्या वास्तव में वह खुश थी? उसका पति डाक्टर साहब शुरु से ही ठंडे मिजाज के थे। ठंडे और पथरीले। कृष्णा का डाक्टर के साथ रिश्ता कुछ अजीब था। डाक्टर को रस्मों में कोई विश्वास नहीं था। वह अपनी पत्नी से छोटी मोटी बातें भी नहीं करता था। पत्नी पर कोई रोक टोक नहीं थी। वह कहीं भी अपने मर्जी के अनुसार आ जा सकती थी। उसके आने या जाने का उसे कोई फर्क नहीं पड़ता था। उसके न जाने से डाक्टर के रुटीन में कोई फर्क न पड़ता था। उसकी घोर उदासी कृष्णा को बहुत खल रही थी। इस उपन्यास में कृष्णा को मिली स्वतंत्रता संतोषजनक नहीं है। घोर उपेक्षा और निराकरण का प्रतीक है। पत्नी के प्रति निर्भावुक पति का अनादर है।

डॉक्टर तो इतने निर्विकार रहते थे कि किसी बात में उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं थी। इसलिए वह उससे बात करने का बहाना ढूँढ़ निकालती। जान बूझकर सब्जी में नमक ज़्यादा डालती। फिर भी डाक्टर उसे खा लेते,

[5] मैं घूमर नाचूँ– कमलकुमार- राजपाल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या- १६
[6] मैं घूमर नाचूँ– कमलकुमार- राजपाल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या- २४
[7] मैं घूमर नाचूँ– कमलकुमार- राजपाल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या- २५

पूछने पर कहते, " मुझे तो ठीक लगी थी।" वह उसे बात में शामिल करने के लिए अपने गाँव की कहानियाँ सुनाती, मेले-त्योहारों के बारे में कहती और नाचने लगती। उसकी इन हरकतों से डाक्टर खुश होकर बोलने के बजाय और भी चिढ़ जाते। एक ऐसे ही संदर्भ में कृष्णा सावन का गीत गा रही थी। उसे अपने गाँव की याद आ रही थी। उसके उत्साह को देख डाक्टर साहब ने गाँव होकर आने के लिए कहा। सारे सामान रामधन से मंगाने के लिए भी कहा था। उस रात कृष्णा और भी जाने क्या क्या बात कर रही थी। उसने कल के ऑपरेशन का बहाना बनाकर बत्ती बुझा दी। " कमरे के साथ साथ उसके भीतर भी रोशनी की आखरी चिलक बुझ गई थी।"[8]

वह अपने पति से आत्मनिवेदन करती है -" डॉक्टर आपसे मुझे कोई शिकायत नहीं है। जानबूझकर आपने कभी मेरा बुरा नहीं किया, मेरा दिल नहीं दुखाया।" "समस्या यह थी कि आप और मैं अलग फ्रीक्वेंसी पर थे.... आपकी ज़रूरतें भौतिक अधिक थीं और मेरी भावात्मक। यूँ आपने मुझे सारे सुख और सुविधाएँ दीं। मेरे आराम का ख्याल रखा.... आपकी पत्नी होने के नाते मैं उनका उपयोग कर सकती थी। जब मैं आपकी पत्नी नहीं रहूँगी तो वे सारी सुख-सुविधाएँ भी मेरी नहीं होंगी। इसलिए अमीर पतियों से अलग होकर पत्नियाँ दरिद्र हो जाती हैं। बेबसी और लाचारी का जीवन जीती है। [9] इन वाक्यों में कितनी सच्चाई है!

पूरे उपन्यास में हर तरह की नारी का वर्णन है। अपने पति को खोनेवाली ठकुराइन है, पैसे लेकर रोनेवाली रुदालियाँ हैं, चित्रकार हैं, बीनणी है – हर कोई इस पुरुषसत्तात्मक व्यवस्था के शोषण का शिकार है। रुदालियों को लक्ष्य करके कही गयी ये बातें मानो स्त्री समुदाय को दी गई चेतावनी है - " अरी राँडो, अपनी औकात में रहो, अपनी चादर में गुस्सा करो। इससे बाहर निकलीं तो देखना।"[10]

वास्तव में औरत का जीवन शूली ऊपर नटविद्या के समान है। राजस्थान के सुप्रसिद्ध भवाई नृत्य प्रदर्शन में औरत अपने सिर पर घड़ों को रखकर संतुलन साधती हुई नाचती हैं। उनमें घड़ा नाच, बोतल नाच, तलवार नाच आदि प्रसिद्ध हैं। वाद्यकार के वाद्य की लय के अनुरूप नटी नाचती रहती है। अगर किसी तरह संतुलन बिगडकर नटी गिर जाती है तो सारा खेल बिगड़ जाता है। गिरकर आहत नटी पर किसी की सहानुभूति नहीं रहती। खेल बिगाड़ने का आरोप डालकर उसे प्रताडित किया जाता है। बहुत पीड़ाओं को झेलती हुई स्त्री फिर अगले प्रदर्शन के लिए सिद्ध होती है। लेखिका ने औरत के जीवन के रूपक के रूप में इसे लिया है। औरत का जीवन भी इसी तरह है।

कृष्णा की तरह अपनी आत्मा की पुकार को सुनकर पति को त्यागकर विस्थापन की पीडा को झेलती ज़रीना आपा भी अपने औरत के साथ जीने का संकल्प करके उसमें सफल बनती है। पूर्व में वह बहुत बड़े

[8] मैं घूमर नाचूँ– कमलकुमार- राजपाल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या- ८०
[9] मैं घूमर नाचूँ– कमलकुमार- राजपाल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -५२
[10] मैं घूमर नाचूँ– कमलकुमार- राजपाल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या -३८

जमीन्दार की पत्नी थी। पर उसकी नज़रों के सामने ही उसके पति दूसरी शादी करके बहू लाए थे। ज़रीना को घर के पिछवाड़े में भेज दिया था। ज़रीना को घर के स्टोर् से गहने,कपड़े मिलते थे। बाहर जाते समय उन्हें पहनकर जमींदार की पत्नी होने का दौलत दिखाती थी। लोग उसके भाग्य की तारीफ किया करते थे। पर अंदर वह खोखला बनी हुई थी। अपने पति का स्नेह उसे नहीं मिला था। मेहरुन्नीसा से किसी विराम के क्षणों में अपने दिल का दर्द खोल दिया था। उसकी दीनता इन शब्दों में प्रकट होती है – " मेहरू मैं ग्रेज्युएट हूँ फाइन आर्ट में। मेरे पास करीम और अपने खर्च का, रहने का कोई ज़रिया नहीं है। कोई ठिकाना नहीं है।मैंने अपनी अम्मी और अब्बू को इत्तला दी थी। कहा था- मुझे ले जाएँ। पर वे नहीं माने। यही हिदायत दी गई कि जैसे भी हो अपने घर में अपने खाविंद के साथ ही रहो। "

बहुत सहने के बाद एक दिन जरीना ने अपने खाविंद से पूछ बैठा था – " मैं आपसे पूछना चाहती हूँ कि इस घर में और आपकी ज़िंदगी में मेरी क्या हैसियत है?" उसका उत्तर मिला – "सिर्फ जब चाहो यहाँ से दफा हो सकती हो।"[11] निष्ठुर होकर पति ने घर से खदेड़ दिया था।

बाद में वह उससे अलग होकर संघर्षों से गुज़रते हुए चित्रकार के रूप में प्रतिष्ठित हो जाती है। करीम की शिक्षा दीक्षा भी अच्छी जगह होती है। संजीव के साथ वह विवाह किए बिना जीती है। जब कृष्णा संकोच से उनके संबंधों के बारे में पूछती है तो बोल्ड होकर बताती है कि, " हाँ, मेरा इससे पूरा रिश्ता है। जिस्म का भी और मेरी रूह का भी।"[12]

इस तरह 'मैं घूमर नाचूँ' उपन्यास विभिन्न स्तर की स्त्रियों की व्यथा कथा प्रस्तुत करने के साथ साथ अपने भीतर की औरत के साथ सफर करने का साहस दिखानेवाली औरत की कथा है।

****

[11] मैं घूमर नाचूँ – कमलकुमार - राजपाल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या - ५७

[12] मैं घूमर नाचूँ – कमलकुमार - राजपाल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या - ६४